तागिन लोक-गीत: ञ्मअ कबनम

चाचू दाई

अरुणाचल प्रदेश के नामकरण का उल्लेख प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री माता प्रसाद जी की पुस्तक 'मनोरम भूमि अरुणाचल' में हुआ है। इस किताब में बताया गया है कि अरुणाचल प्रदेश का प्राचीन नाम 'उदयाद्रि' था। अरुणाचल प्रदेश की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विविधता को साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत हिंदी के कवि एवं गीतकार डॉ. तारो सिन्दिक अपने कविता संग्रह 'फिर आना तुम' में बखूबी अंकित करते हैं- "हिमालय की गोद से बहती हजारों नदियां हैं/हर मौसम में खिलते यहां कई फूल और कलियां हैं/सियाङ सुबनसिरी के संग बहती जीवन की धारा है/कामेङ लोहित तिराप से, मिलता सबको सहारा है/ईश्वर से हमको मिला ऐसा अनमोल खजाना है/कोई लूट नहीं पाये इसको, वचन ये हमको देना है।" अरुणाचल प्रदेश की जनजातियां अपनी कई सारी उप-जनजातियों से जुड़ी हुई हैं। इनमें आपसी भिन्नता है, तो विविधता भी ढेरों हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से सबकी अपनी अलग बोली-वाणी, खान-पान, रीति-रिवाज, पोशाक-परिधान, आभूषण और लोक-मान्यताएं आदि हैं। यह भी सच है कि भिन्नताएं होने के बावजूद सब एक-दूसरे से सद्भावना और भाईचारा बनाए रखते हैं। तानी समुदाय 'आबो-तानी' के वंशज कहे गए हैं जिनमें न्यीशी, आदी, गालो, आपातानी, तागिन पांच जनजातियाँ शामिल हैं। साहित्य, कला, संस्कृति और दर्शन के नज़रिए से तागिन जनजाति की अपनी लोक-समृद्ध परंपरा और लोक-जीवन है। तागिन जनजाति अप्पर सुबनसिरी जिले में बसी हुई है। 'मौखिक लोक-साहित्य' की दृष्टि से यह जनजाति बेहद समृद्ध है। प्रकृति के विविध रंग-रूप तागिन जनजाति की लोक-मान्यताओं और लोक-विश्वासों में देखे जा सकते हैं। तागिन जनजाति के संपूर्ण जीवन दर्शन में सामुदायिक उद्भव और विकास, संघर्ष और निरंतरता की गाथा विद्यमान है। अनादिकाल से मौखिक परंपरा में चली आ रही तागिन-लोक कथाएं, लोक-मिथक, लोक-सुभाषित तथा लोक-गीत वर्तमान तागिन लोक-साहित्य का अभिन्न हिस्सा बनी हुई हैं। उदाहरण के रूप में तागिन लोक-गीत की ही चर्चा की जाये तो उनमें उत्पत्तिमूलक, हर्षोल्लास, स्वप्न, वात्सल्य तथा ञ्मअ कबनम आदि अनेक प्रकार के गीत होते हैं। इन लोक-गीतों में जीवन के विविध प्रसंगों को प्रसंगानुकूल व्यक्त करने का पारंपरिक तरीका बेजोड़ है।

'ञ्मअ कबनम' तागिन समाज में एक विशेष लोक-गीत है जिसे अधिकांशतः महिलाओं के कंठ से सुना जाता है। 'ञ्मअ कबनम' लोक-गीत का परंपरा से अनुसरित अथवा स्वनिर्मित सुर-ताल, धुन-लय आदि से संबंध होता है। यह लोक-गीत हर्ष, व्यक्तिगत कुंठा-निराशा, विदाई समारोह, मृत व्यक्ति की स्मृति आदि में महिलाओं के द्वारा गाया जाता है। पारंपरिक ञ्येदा (विवाह) समारोह के दौरान या समापन के दौरान माँ अपनी अंतरआत्मा से निकली भावनाओं को व्यक्त करती हुई कुछ व्यावहारिक जीवन से संबद्ध नैतिक बातें गाकर बताती है जिसे 'ञ्मअ कबनम' के संबंध में कहा जाता है यथा :

"कू नो ञेबू लो सेकू बोलो
नो अल ब दोबअ ग लेमी डा
रियू ग लेमी डा,अतु-आयु ग लेमी डा सेबियुम लाकअ

मातु ग हबू ब दोकर मबअ क
मरी ग लअमी ब पोकर मबअ क
कु नो असर ब नासु-राङो ङा यारसु ला
चिदे-मोदा सो इरिक सोला पोरोक सोला
ञ्येलू-कु हा असर सेगे लकअ।"

भावार्थ यह है कि प्रिय बेटी, तुम पराएघर की बहू बन गई हो इसलिए तुम्हारी जिम्मेदारी है, अपने सास-ससुर और साला या सालियों को अपने सगे भाई और माता-पिता समझकर प्रेम से रहना सम्मान करना। इस संसार में तुम खेतों का काम करने के साथ-साथ सूअर, मुर्गी आदि पालकर अपने पति और बच्चों के साथ एक बेहतर जीवन जीने की कोशिश करना। पति और सास-ससुर की नजरों से गिरकर अपने जीवन में भटक मत जाना, माँ का आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा।

ञ्मअ कबनम केवल एकपक्षीय नहीं होता है, उसमें मकतअ (दामाद) के लिए भी गाया जाता है। माँ 'ञ्मअ कबनम' लोक-गीत के मध्याम से अपनी बेटी की अच्छाईयों-बुराइयों, उनके चरित्र में निहित कुशलता आदि स्पष्ट रूप से मकतअ (दामाद) को बताती है। मकतअ से बेटी की माँ कहती है कि 'दोञ्यी-पोलो' के आशीर्वाद से तुम दोनों की जोड़ी बनी है इसलिए मेरी बेटी में कुछ बुराइयों भी होगी तो तुम उसे तरासने का कार्य करना, वैवाहिक जीवन जीने के आरंभिक क्रम में उसे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़े तो तुम सदा उसके साथ रहना आदि गीतों के माध्यम से माँ अपने जीवन अनुभव को आधार बनाकर बेटी और मकतअ को व्यावहारिक जीवन के संबंध में नैतिक बातें व्यक्त करती है।

विवाह समारोह के अलावा 'ञ्मअ कबनम' गीत शोक एवं स्वप्न के संबंध में भी सुनने को मिलता है। प्रकृति का नियम है जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु होना भी निश्चित है। तागी समाज के लोगों विशेषकर जब किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तब महिला 'ञ्मअ कबनम' गीत को शोक गीत के रूप में गाती है और वह शोक गीत की शुरुआत होने पश्चात् तब तक गाती है जब तक उसका मन शांत नहीं होता है इसलिए इस गीत का कोई समापन अवधि तय नहीं होता है यथा:

"हाजी लो कई लो तङा मई लो तङा,
आयु लो तङा नुनू द तङा काजी लो तङा
अनअ ग गिदा लो अबू गे गिदा गीतअ लो
ङो आयु ननअ ग गिदा ङा दोगअ ला
अबू ग तरु हा दोगअ ला नो दरते ने दरू न
अबू न मियर कुमा ब ना।"

अर्थात मृतक के साथ भू-लोक में बिताई अपनी स्मृतियों को व्यक्त करने के पश्चात् कहता है कि तुम अब अपने पूर्वजों यानी माता-पिता, मामा-मामी आदि के लोक में चली गयी हो, इसलिए धरती लोक में बिताई स्मृतियों को भूलकर उई मियोक (स्वर्ग) में शांतिपूर्वक रहना यही 'आनअ दोञ्यी' से प्रार्थना है हमारी। गायिका ऐसा इसलिए कह रही है, क्योंकि मृतक की मृत्यु उम्र ढलने के कारण हुई होती है।

स्वप्न देखना एक आम बात है, सामान्यतः स्वप्न दो प्रकार के आते हैं- सकारात्मक एवं नकारात्मक। इसे लेकर भिन्न-भिन्न जनजातियों की अपनी-अपनी मान्यताएं एवं धारणाएं है। तागिन समाज में यह माना जाता है कि अगर निद्रा की अवस्था में एक ही प्रकार के स्वप्न को देखना किसी अभिशाप से कम नहीं माना जाता है, जिसे नकारात्मक स्वप्न कहा जाता है। जब किसी व्यक्ति को बार-बार स्वप्न में स्वर्गीय माता-पिता या दादा-दादी आदि को दिखने लगती हैं, तब गाँव के बुजुर्ग महिलाओं या पुरुष को यह अनुभव होने लगता है कि उनकी आत्मा अब देह त्यागने वाली है। ऐसे स्वप्न को बड़े बुजुर्ग या महिलाएँ किसी से साझा नहीं करती हैं, बल्कि प्रात:काल मुर्गों के बाग देने से पूर्व वह जागती है और अपने भावों को गाकर व्यक्त करती है, यथा:

"आनअ दोञ्यी नो ग सेङदुंग –सेङनअ ङ
लङदू ङा लङनअ ब दोकुम अ पनअ यु अ
सचीङ तोलो ञेदो सोबो ङा लिमरी बू अ
सतअ समीर, पकचीङ पकरो ङा रुचा मोजी ला अ
तुरीय पुकचीङ ङा पुकचा मुजी ला अ
सी- दोञ्यी नो दनअ पुनुङ क्यारु-रारु ङा तोरिया
रियारा तो अ
अबू ङो दअ सिपु ताओ, तारक ब लिमा दअ अ
अनअ ङो दअ दकोर गु मिम्कोर मा दकरप गु
मोमोर मा"

अर्थात् व्यक्ति अपने ईष्ट देव 'दोञ्यी-पोलो' से विनती करते हुए कह रहा है कि आपके द्वारा निर्मित धरती, आकाश, नदियां, पत्थर आदि युगों तक रहेगा और अपने जीवनकाल में मैंने कभी भी आपके बनाए शेर, हाथी, हिरण आदि को अकारण नुकसान नहीं पहुँचाया है, बल्कि मैंने तो आपके बनाए प्रकृति के सभी जीव और निर्जीव वस्तुओं के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार किया है। आपसे मेरी विनती है कि मेरी आत्मा को जहाँ मेरे पूर्वजों की आत्मा है, वहाँ न बुलाएं। दूसरी बात यह है कि व्यक्ति का धरती लोक में अपना कुछ उद्देश्य है, उसे पूरा होते देखना चाहता है ताकि जब उसकी आत्मा देह त्याग दे तब मन में कोई कलेश न हो।

तागिन समाज में 'मौखिक, लोक-गीतों की संख्या पर्याप्त मात्रा में आज भी मिलती है। तागिन समाज प्रकृति की उपासना करते हैं, इसलिए उनकी सभी पूजा-पद्धति प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से संपन्न होती है, जिसमें अहम भूमिका पुरोहित की होती है। तागिन समाज की स्थानीय पूजा पद्धति आयोजन के दौरान पुरोहित के मुख से उच्चारित मंत्रों को पूर्ण 'लोक-गीत' की संज्ञा तो नहीं दे सकते फिर भी उसमें लयात्मकता एवं छंदबद्धता होती है, उदाहरण:

चेतु आनअ नो साकअ आनअ नो
हिली कम्पू, हिन्जू कम्पू अलअ दारचा जिला का
हिन्जू आई ग पुपुआ पुरचा जिला का, ञ्येदर जिला कुका
हिली-मोरी लो आई कुनअ ला,

बुम्पी-बुमरो ग हाबू लो आई कुनअ ला सु बतु लो तुलअ सी कुनअ ला,
दोगी-दोगबअ ग डगलअ हिकू नअला
हन्यी नो,तजर नो डुनअ ज्येदर जिला कुका
बोबी नो, जोर नो डुनअ ज्येदर जिला कुका

इस मंत्रोच्चारण में पुरोहित मृतक की आत्मा को कह रहा है कि तुम्हारी मृत्यु चेतु आने आबो-तानी को दिया हुआ श्राप के कारण हुई है, इसलिए तुम्हें आने-चेतु के दिखाए रास्ते से 'उयु-मियोक' चले जाना है। उयु-मियोक से तुम तानी-मोको (धरती लोक) में आत्मा के रूप में लौटकर मत आना क्योंकि अब हमारी और तुम्हारी दुनिया अलग हो चुकी है और तुम उई-मियोक से प्रार्थना करना कि धरती लोक में बसे तुम्हारे परिवार वालों के साथ फिर कभी अप्राकृतिक मृत्यु न हो तथा परिवार के लोगों की सुख-समृद्धि की कामना करना। हम भी 'चेतु-आनअ' से यही कामना करते हैं कि उयु-मियोक में तुम्हारे रहने के लिए अच्छी व्यवस्था करेंगे, इसी उम्मीद के साथ हम तुमसे विदा लेते हैं। लयात्मकता एवं छंदबद्धता के आधार पर कहा जा सकता है कि भारतीय काव्यशास्त्र में आचार्य दंडी, भामह आदि ने जो काव्य के लक्षण दिए हैं, वह सभी विशेषताएं तागिन पुरोहित द्वारा उच्चारित मंत्रों में देखने को मिलती है क्योंकि मंत्रोच्चारण की शैली लोक-गीत की शैलियों की तरह होता है। श्रोता मंत्रोच्चारण की धुन, लय और प्रवाह से वही भाव अनुभव करते हैं, जैसे सामान्य लोक-गीत को सुनकर होता है।

अतः तागिन समाज के 'ज्मअ कबनम' तथा पुरोहित के लयात्मक रूप से मंत्रोच्चारण में तागिन लोगों के जीवन के विविध प्रसंगों को व्यक्त करने का एक पारंपरिक तरीका देखा जा सकता है, जो सामान्य लोक-गीत नहीं है क्योंकि इन गीतों में उनके जीवन कल में आने वाले सुख-दुःख, संत्रास, संघर्ष, उत्साह, आकांक्षा, कल्पना, स्वप्न इत्यादि की जीवंत अभिव्यक्ति जुड़ी होती है।

सहायक ग्रंथ सूची-

तागिन लोक-साहित्य: लोक-विश्वास एवं मिथकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन; एम.फिल, 2022, शोधार्थी: चाचू दाई, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश.

तागिन लोक-साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन; पीएच. डी. 2018, शोधार्थी: तारो सिन्दिक, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश.

*(**लेखकीय परिचय :** चाचू दाई वर्तमान में शासकीय महाविद्यालय, दापोरिजो, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में अतिथि सहायक प्रोफेसर हैं। मोबा: 6033869177, ई-मेल : daichachu@gmail.com)*